हिन्दी

पाठ - 08 - वे दिन भी क्या दिन थे

शब्दार्थ :-

महत्वपूर्ण - खास
जमाना - युग
पृष्ठ - पेज
पश्चात् - बाद में
स्थिर - रुकना
सामान - वस्तु
नियमित - नियम से
कोसना - गाली बुरा कहना
उबाऊ - बोर करने वाली
बुद्धू - बेवकूफ
उत्सुकता - बेचैनी, प्रबल इच्छा
अध्यक्ष - प्रधान, मुख्य अधिकारी
पुर्जा - भाग
पुनः - दोबारा
सिलसिला - क्रम
सबक - शिक्षा

सोचो -

प्रश्न (1) कुम्मी के हाथ जो किताब आई थी वह कब छपी होगी?

उत्तर - कुम्मी के हाथ जो किताब आई थी वह आज के जमाने में छपी होगी।

प्रश्न - (2) रोहित ने कहा था, "कितनी पुस्तकें बेकार हो जाती होंगी। एक बार पढ़ीं और फिर बेकार हो गईं।" क्या सचमुच में ऐसा होता है?

उत्तर :- हाँ, यह सच है, कुछ ऐसी भी पुस्तकें होती हैं जो एक बार पढ़ लेने के बाद लोग दुबारा नहीं पढ़ते हैं। वे बेकार हो जाती हैं। लेकिन कुछ पुस्तक ऐसी भी होती है जिसे एक बार पढ़ने के बाद बार-बार पढ़ने की इच्छा होती है। ऐसी पुस्तकों को संभाल कर रखते हैं।

प्रश्न (3) कागज के पन्नों की किताब और टेलीविजन के पर्दे पर चलने वाली किताब। तुम इनमें से किसको पसंद करोगे? और क्यों?

उत्तर - मैं कागज के पन्नों वाली किताब को पढ़ना पसंद करूँगा। क्योंकि किताब हमेशा हमारे पास रहेगा।

P.T.O.

Scanned with CamScanner

हम जब चाहे तब, जहाँ चाहे वहाँ पढ़ सकते हैं। इसमें हमारी इच्छा होगी। लेकिन टेलीविजन की पढ़ाई का निश्चित समय होगा। उसे हम एक ही जगह पर रख कर पढ़ सकते हैं।

प्रश्न (4) तुम कागज पर छपी किताबों से पढ़ते हो। पता करो कि कागज से पहले की छपाई किस-किस चीज़ पर हुआ करती थी?

उत्तर- कागज से पहले की छपाई कपड़ों, मोजपत्रों, लकड़ी तथा धातु के बने पात्रों पर होती थी।

प्रश्न- (5) तुम मशीन की मदद से पढ़ना चाहोगे या अध्यापक की मदद से? दोनों के पढ़ने में किस-किस तरह की आसानियाँ और मुश्किलें हैं?

उत्तर- हमें अध्यापक की सहायता से पढ़ना अच्छा लगेगा क्योंकि अध्यापक से पढ़ने से भावनात्मक लगाव होता है। वे किताब के कठिन शब्दों को सरल रूप में बताते हैं। अगर हमें कोई प्रश्न समझ में नहीं आता तो अध्यापक से पुनः समझ सकते हैं। मशीन से पढ़ाई करने में हमें खुद मेहनत नहीं करनी पड़ती है। फलतः हम विषय की गहराई तक नहीं पहुँच पाते हैं।

कल, आज और कल

(3) कंप्यूटर का प्रयोग आज कल हर क्षेत्र में हो रहा है। व्यक्तिगत क्षेत्र में हम कंप्यूटर का इस्तेमाल - व्यवसाय के लेन-देन का हिसाब रखने, पढ़ाई-लिखाई के लिए, मनोरंजन के लिए और भी कई प्रकार की जानकारी के लिए करते हैं।

Scanned with CamScanner

(3) उत्तर - सार्वजनिक क्षेत्र में कंप्यूटर का इस्तेमाल - रेल, बस, हवाई जहाज, के आरक्षण, सूचनाएँ भेजने के लिए सार्वजनिक जानकारियों को प्राप्त करने आदि बहुत स्थानों पर इसका प्रयोग होता है।

(4) उत्तर -
जानकारी के अन्तर्गत निम्न आते हैं -

संदेश →
चित्र →
फैक्स →
विज्ञापन →
इंटरनेट ↔
~~भाषाएँ~~
फोन ↔
अभिनय →
मोबाइल ↔
तार ↔

रेडियो →
नोटिस →
टी.वी. ↔
इश्तहार →

मोबाइल संदेश ↔
संकेत-भाषा →
नृत्य के हाव-भाव →

Scanned with CamScanner

हिन्दी

पाठ - 09 - एक माँ की बेबसी

शब्दार्थ:-

अदृश्य – जो दिखाई न दे। अजूबा – अद्भुत, विचित्र
भिन्न - अलग भयभीत – डरा हुआ
छटपटाहट – बेचैनी निहारना - देखते रहना
बेहतर – बढ़िया झलकना - दिखाई देना
बेबसी - परेशानी घबराना - डरना

कविता – न जाने किस ---------- वह भी एक बच्चा।
प्रस्तुत पंक्तियों में कवि ने एक रतन नाम के लड़के के बारे में कहते हैं कि न जाने वह लड़का कहाँ से आ कर खेलने लगता है? देखने में तो वह हम सभी की तरह ही था, लेकिन वह बोल नहीं सकता था। वह हमारे साथ खेलते समय एक टूटे हुए खिलौने जैसा लगता था।

कविता - लेकिन हम बच्चों- .... की छटपटाहटों को।
कवि कहते हैं कि वह दूसरे बच्चों की तरह न था सारे बच्चों के लिए रतन विचित्र था। उस बच्चे से सभी घबराते थे। सभी बच्चे उनके संकेतों, इशारों को समझ नहीं पाते थे कि वह अपने इशारों से क्या कहना चाहता है? उसकी घबराहट को वे समझ नहीं पाते थे।

कविता - जितनी देर वह रहता - .... झलकती उसकी बेबसी।
रतन जितनी देर बच्चों के साथ खेलता था उसकी माँ उसके पास ही बैठी रहती थी। कवि उस समय उसकी का कारण नहीं जान पाये थे,

लेकिन शारीरिक रूप से विकलांग के दर्द को अब वे समझने लगे थे। कवि को रतन से अधिक अब उसकी माँ की आँखों में उसकी लाचारी झलकती थी। क्योंकि गूँगे बच्चे की विवशता से उसकी माँ बहुत परेशान रहती थी।

कविता से—

① उत्तर- रतन नाका वह लड़का कवि के पड़ोस में ही रहता था। फिर भी कवि ने अपनी कविता अदृश्य पड़ोस की चर्चा की है इसका कारण हो सकता है कि वह बच्चा पड़ोसी होने के बाद भी सभी बच्चों की तरह एक दूसरे से बात नहीं करता था। इसलिए वह पड़ोसी होने के बाद भी दूसरों बच्चों से अनजान था।

दूसरा अर्थ यह भी हो सकता है कि कवि ने उस बच्चे को पहली बार देखा हो।

② उत्तर - स्व- डर के रूप में

तरह-तरह की भावनाएँ

1. (क) उत्तर - छटपटाहट तब होती है जब हमारी इच्छा के अनुसार कोई काम नहीं होता है। इस तरह की भावना कहीं भी महसूस होती है। यह बात बच्चे पर लागू होता है। बच्चा बोल नहीं सकता है। इशारे करता है लेकिन उसकी इशारों को कोई समझ नहीं पाता है तो वह छटपटाता है।

(ख) यदि हमने कोई गलत काम कर दिया है तो मन में घबराहट होती है। चाहे घर, स्कूल या और कोई स्थान हो।

Scanned with CamScanner

भाषा के रंग –

2. उत्तर – बेजोड़ , बेईमान
बेशर्म बेघर

देखने के तरीके –

1. उत्तर – झलकती , आँखें, निहारती, अदृश्य, , देखना, इशारे

2. इनमें सभी नजरों को मैं पहचानता हूँ।

3. मुहावरे का अर्थ लिखकर वाक्य बनायें –

आँख दिखाना – (गुस्से में आना)
नजर चुराना – (बचने की कोशिश करना)
आँख का तारा – (बहुत प्यारा)
नजरें फेर लेना – (मदद करने से बचना)
आँख पर पर्दा पड़ना – (असलियत दिखाई न देना)

} वाक्य, बच्चे अपने बनायें

कक्षा - 5
हिन्दी

पाठ - 10 - एक दिन की बादशाहत

शब्दार्थ :-

बादशाहत → बादशाह
अम्मी - माँ
खैर - बिलकुल
आपा - बड़ी बहन
झिंझोरकर - हिलाकर
पाबंदी - रोक-टोक
तकरार - झगड़ा
चूजे - मुर्गी के बच्चे
तरकीब - उपाय, तरीका
खिदमत - सेवा
निवाला - रोटी का एक टुकड़ा
गत - हालत
गजल - उर्दू की कविता
तुनककर - गुस्से में आकर
कबाब - बिना हड्डी का माँस
खून का घूँट पीकर रहजाना → गुस्से को दबा लेना
खाकसार - नीच
निहायत - बिल्कुल
गारत - खराब, बर्बाद

दरख्वास्त - प्रार्थना पत्र
उधम मचाना - शोर करना
इकरार - स्वीकार
किस्म - तरह
हरीरा - उबले हुए दूध में मेवा आदि मिलाकर बनाया गया पकवान
खानसामा - रसोइया
कहर - आफत
घूरना - गुस्से से देखना
बेबस - लाचार
गुसलखाना - स्नान घर
शर्मिंदा - शर्म आना
पाँव पटकना - गुस्से में आना
गोश्त - माँस
सालन - सब्जी या गोश्त का रस
इजाजत - आदेश
मुआयना - अच्छी तरह देखना
शिकन - सिलवटें

प्रश्न :- (1) अब्बा ने क्या सोचकर आरिफ की बात मान ली?
उत्तर :- अब्बा उस दिन बहुत खुश थे। इसलिए उन्होंने आरिफ की वे बातें मान ली कि एक दिन बच्चों को भी घर में बड़ों की ~~तरह~~ तरह, बड़ों से काम करने का अधिकार देना चाहिए यह देखने के लिए कि वे अपनी जिम्मेदारी कैसे निभाते हैं।

Scanned with CamScanner

प्रश्न-② वह एक दिन बड़ा अनोखा था जब बच्चों को बड़ों के अधिकार मिल गये थे। वह दिन बाद •आरिफ, •अम्मा, तथा •दादी ने क्या सोचा होगा।

उत्तर- आरिफ़ ने सोचा होगा कि वह दिन भी क्या दिन था, बहुत मजा आया। काश ऐसा दिन रोज ही हमें मिलता तो बहुत अच्छा था।

तरकीब

1. तुम्हारे विचार से वे कौन-कौन सी तरकीबें सोचते होंगे?

उत्तर- वे दोनों कहीं बैठ कर यह सोचते होंगे कि हमें भी बड़ों को डाँटने और उन से काम लेने का अधिकार मिल जाता, हम कहीं ऐसी जगह होते जहाँ हमें कोई डाँटने वाला नहीं होता।

2. प्र०- कौन सी तरकीब से उनकी इच्छा पूरी हो गई थी?

उत्तर- उन्होंने ने अपने आवा से एक दिन के लिए वे सारे अधिकार माँग लिए थे जिससे बड़े भी छोटों की तरह रहें तथा छोटों की बात माने। इसी बात से दोनों की इच्छा पूरी हुई।

3. प्र०- क्या तुम उन दोनों को इस तरकीब से भी अच्छी तरकीब सुझा सकती हो?

उत्तर- सबसे अच्छी तरकीब यह है कि वे दोनों बच्चे अपनी आदतों में सुधार कर लेते और अपने बड़ों की आदर करते तथा अपनी बात उनके सामने विनम्रता से रखते।

P.T.O.

Scanned with CamScanner

बादशाहत

1. प्र० बादशाहत क्या होती है?
उत्तर - किसी क्षेत्र, राज्य अथवा देश आदि पर मनचाहा शासन तथा पूरा अधिकार होना बादशाहत कहलाता है।

2. उत्तर - इस कहानी में आरिफ़ और सलीम को बड़ों के सभी अधिकार सौंप दिए गए थे। इसलिए कहानी का नाम "एक दिन की बादशाहत" रखी गई। इसका दूसरा शीर्षक - "बच्चों की जिम्मेवारी" या "बच्चों का शासन" भी हो सकता है

3. प्र० - कहानी में उस दिन बच्चों को सारे बड़ों वाले काम करने पड़ते थे। ऐसे में कौन एक दिन का असली 'बादशाह' बन गया।
उत्तर - हर दिन बड़े लोग बच्चों पर हुक्म चलाया करते थे लेकिन उस दिन बच्चों के आदेश पर सभी बच्चों को काम करना पड़ा था। उस दिन आरिफ़ एवं सलीम ने एक दिन के लिए असली बादशाह बने थे।

हल्की - भारी

1 (क) का उत्तर - साड़ी पर बेल-बूटों की कढ़ाई थी।

(ख) इसमें भारी शब्द के विभिन्न अर्थ में बताया गया है -
भारी साड़ी - अधिक महंगी
भारी अटैची - वजनदार के अर्थ में
भारी काम - बड़ा काम
भारी बारिश - अधिक मात्रा में

हिन्दी

पाठ - 11 - चावल की रोटियाँ

शब्दार्थ :

फूलदान – फूल रखने का बर्तन
बाँग - मुर्गे की आवाज
मनपसंद - मन को पसंद आनेवाली
गजब - हैरान
पेट में चूहे कूदना – भूख लगना
बंडल – लिपटा हुआ सामान
सॉरी - माफी चाहता हूँ
स्वागत - अपने आप से
एलर्जी – फोड़े-फुंसी होना
यकीन – विश्वास

चहचहाना - पक्षियों की आवाज
तश्तरी - प्लेट
दस्तक देना - दरवाजा खटखटाना
भुक्खड़ - हमेशा खाने वाला
तलाशी लेना - खोजना।
इर्द-गिर्द - आस-पास
बदकिस्मती - बुरी किस्मत
नेकी - भलाई
जिस्म - शरीर
गुडबाइ - अलविदा।

प्रश्न - ① नाटक में हिस्सा लेने वाले कौन-कौन से पात्र हैं?
उत्तर - नाटक में भाग लेने वाले पात्र हैं- कोको, नीनी, तिन-सू, मिमि, उ बा तुन।

प्रश्न - ② जब नीनी कोको को रेडियो लाने के लिए कहता है तो वह क्या बहाना करता है?
उत्तर - जब नीनी कोको को रेडियो लाने के लिए कहता है वह कहता है कि रेडियो खराब है।

प्रश्न - ③ कोको चावल की रोटियों वाली तश्तरी उठा कर कहाँ आता है?
उत्तर - कोको चावल की रोटियों वाली तश्तरी उठाकर मेज के पास आता है।

प्रश्न-④ गड़गड़ाने की आवाज के बारे में कोको क्या झूठ बोलता है?

उत्तर- भूख के मारे कोको का पेट आवाज कर रहा था। लेकिन उसने यह बात छिपा कर दोस्तों से बताया कि मेरे घर में चूहा घुस आया है गड़गड़ की आवाज कर रहा है।

प्रश्न-⑤ तिन सू फूलों का गुच्छा किसके लिए ले कर आया था? और उसे किसने भेजा था?

उत्तर- तिन सू फूलों का गुच्छा कोको की माँ के द्वारा खरीदे हुए फूलदान में रखने के लिए ले- कर आया था। उसे उसकी माँ (तिन सू की माँ) ने भेजा था।

प्रश्न-⑥- जब मिमि फूलदान में फूल लगाने के लिए उठती है तो कोको उसे क्यों रोक देता है?

उत्तर- जब मिमि फूलदान में फूल लगाने के लिए उठती है तो कोको उसे रोक देता है क्योंकि उसे यह डर था कि कहीं मिमि उसकी चावल की रोटियाँ देख न ले।

प्रश्न ⑦ इस नाटक में भाग लेने वाले मुख्य पात्र तथा गौण- पात्र कौन-कौन है?

उत्तर - इस नाटक में मुख्य पात्र — कोको, मिमि तथा तिन सू है तथा गौण पात्र - नीनी, तथा उ बा तुन है।

नोट - ~~कि~~ नाटक में जिन पात्रों की भूमिका अधिक महत्वपूर्ण होती है उसे मुख्य पात्र तथा जिनकी भूमिका अधिक महत्वपूर्ण नहीं होती है उसे गौण पात्र कहते हैं।

Scanned with CamScanner

पाठ - 12 - गुरु और चेला

कविता - गुरु एक थे - - - - - - - - यहाँ बजता बाजा।

शब्दार्थ -

शिष्य - चेला
नगरी - नगर, शहर
धरे - रखे हुए
गगरी - घड़ा
धेला - रुपये-पैसे
डगरी - रास्ता
शीश - सिर
सुयश - कीर्ति

अर्थ →
एक गुरु और एक चेला थे। एक दिन दोनों घूमने के विचार से बाहर निकले किन्तु उनके पास एक फूटी कौड़ी भी न थी। घूमते - घूमते वे एक ऐसे नगर में पहुँचे जहाँ की सड़कें चमाचम - चमाचम रही थीं। तभी उन्हें एक ग्वालिन दिखाई दी, जो अपने सिर पर घड़ा लिए तेजी से जा रही थी गुरु जी ने ग्वालिन से कहा इतनी तेज मत भागो हमें पहले यह तो बता दो कि यह कौन सा नगर है? और यहाँ के राजा कौन हैं? जिनकी यहाँ हुकूमत का डंका बजता है?

कविता - कहा बहके ग्वालिन - - - - - समझाता न मन में।

शब्दार्थ -

बहके - बढ़कर
टका - रुपया
भाजी - सब्जी
छिन - क्षण (पल)
अनबूझ - नासमझ, मूर्ख
सेर - किलो
खाजा - अनाज

अर्थ → ग्वालिन ने गुरु जी से कहा पंडित महाराज जी भले ही आज आप यहाँ नए आए हैं। इस नगरी को अंधेर नगरी एवं यहाँ के राजा मूर्ख हैं। यह सुन कर गुरु जी ने मन में सोचा यहाँ किसी भी क्षण मुसीबत

P.T.O.

आसानी है। मैं इस मुसीबत में पड़ कर अपनी जान गंवाना नहीं चाहता था हूँ। इसलिए यहाँ रुकना उचित नहीं जान पड़ता।

कविता - गुरु ने कहा किन्तु ------ टके सेर खीरा।

शब्दार्थ -

विवश - लाचार अजाब - अद्भुत

अर्थ -

गुरु जी ने चेला से कहा कि इस अंधेर नगरी से हमें वापस चलना चाहिए, यहाँ रहना उचित नहीं है। लेकिन चेला नहीं माना। अंत में विवश हो कर गुरुजी वहाँ से चले गए। चेला वहीं यह सोच कर रुक गया कि अकेले रह कर यहाँ खूब खा-पीकर मोटा ताजा हो जाऊँगा। वह वहाँ का बाजार देखने चला दिया बाजार जाकर देखा कि वहाँ बहुत भीड़ भाड़ है। वहाँ पर ककड़ी, खीरा, जीरा सभी एक रुपया में एक किलो मिल रहे थे।

कविता - टके सेर मिलती थी ------ चमकती थी बिजली।

शब्दार्थ -

रबड़ी - दूध से बनी मिठाई मलाई - मक्खन

दमकती - चमकना

अर्थ -

वहाँ के बाजार में रबड़ी तथा मक्खन भी टके सेर ही मिल रही थी। चेला ने वहाँ रहकर कुछ दिनों तक खूब मक्खन-मलाई खाया। आगे की स्थिति

Scanned with CamScanner

यह थी कि वहाँ वर्षा बहुत होती थी। वर्षा के साथ-साथ बिजली की चमक के साथ अधिक बादल भी गरजते थे।

कविता - गिरी राज्य की .... यह न मोटी घनी थी।

शब्दार्थ -

झपट - तुरंत
संतरी - सिपाही
खता - भूल, गलती
करतब - कार्य काम
घनी - मजबूत

अर्थ -

बरसात में भारी वर्षा के कारण अँधेर पुर नगरी की एक भारी दीवार गिर गई। दीवार गिरने की खबर सुनकर वहाँ के राजा वहाँ तुरंत पहुँचे। सिपाही को डाँट कर राजा ने पूछा यह दीवार कैसे गिरी? इसे किसने गिराया है। सिपाही ने तुरंत उत्तर दिया - महाराज इसमें मेरा कोई दोष नहीं है, यह पहले से ही कमजोर बनी थी, यह पहले से मजबूत नहीं थी, इस कारण गिर पड़ी।

कविता - खता कारीगर की .... खता कुछ न मेरी।

शब्दार्थ -

खता - दोष, गलती
झट - तुरंत, फौरन, जल्दी
करतब - काम
कजा - मृत्यु दंड

अर्थ -

सिपाही ने राजा से कहा महाराज इसमें मेरा कोई दोष (गलती) नहीं है। इस दीवार को कारीगर ने ही कमजोर बनाया था, जिसके कारण यह गिर गई। राजा यह

बात सुनते ही कारीगर को फौरन बुलाने का आदेश दिया। कारीगर वहाँ तुरंत उपस्थित हुआ। राजा ने कारीगर को मृत्यु दंड देने की आज्ञा दी। परंतु कारीगर ने हाथ जोड़ कर राजा से कहा- इसमें मेरा कोई दोष नहीं है।

कविता - यह भिश्ती की गलती ------ जिसमें था पानी समाया।

शब्दार्थ:

भिश्ती - पानी ढोने वाला
गारा - सीमेंट, बालू से बना पदार्थ
मशक - पानी ढोने के लिए बनी चमड़े की थैली
शरारत - गलती, बदमाशी
गफलत - गलती

अर्थ - कारीगर ने जब राजा से यह बताया कि इसमें दोष सीमेंट, बालू बनाने वाले भिश्ती ने गलत गारा बनाकर मुझे दिया था। अतः दोष भिश्ती का है। राजा ने तुरंत आज्ञा दी कि भिश्ती को बुलाकर फाँसी पर लटका दिया जाए। भिश्ती तुरंत राजा के समक्ष उपस्थित होकर कहा महाराज इसमें मेरा कोई दोष नहीं है। दोष तो चमड़े की थैली बनाने वाले का है। जिसने अधिक बड़ा थैली बना दिया। जिसके कारण इस थैली में अधिक पानी भर गया और अधिक पानी होने के कारण गारा ठीक न बन सका।

P.T.O. →

पाठ - 12 - गुरु और चेला

कविता - मशकवाला आया - - - - - - - - यह गलती बिरानी।

शब्दार्थ :-

खता - गलती
गफलत - गलती
हिकमत - गलती
बिरानी - दूसरों की, परायी

अर्थ -

राजा ने अब मशक बनाने वाले को बुलाया और उसे दीवार गिरने का दोषी ठहराया। परन्तु मशक बनाने वाले ने अपनी जान बचाते हुए राजा से बोला - महाराज इसमें हमारी कोई गलती नहीं है। गलती मंत्री जी की है। उन्होंने मुझे बड़े जानवर का चमड़ा दिलाया। मैंने उस चमड़े की तनिक भी चोरी न की और सारे चमड़े का बड़ा सा थैला बना दिया। इसलिए थैला में अधिक पानी भरने लगा। इसलिए इसमें मेरा दोष नहीं मंत्री जी की गलती है।

कविता - है मंत्री की गलती तो - - - - - - फाँसी दो इसी क्षण।

शब्दार्थ -

हुक्म → आदेश
लेके - लेकर
इसी दम → इसी क्षण

अर्थ - राजा मशकवाले की बात मान कर तुरंत आज्ञा दी - मंत्री को तुरंत लाकर फाँसी पर लटका दिया जाए। महाराज की आज्ञा से मंत्री को फाँसी देने के लिए सिपाही ले गये। लेकिन मंत्री बहुत ही दुबला पतला था। उसकी गर्दन इतनी पतली थी कि फाँसी का फंदा उसके गर्दन में ही नहीं आ रहा था। राजा ने उसी क्षण आदेश दिया कि जिसकी

गर्दन मोटी हो उसे पकड़कर फाँसी पर लटकाओ।

कविता - चले संतरी ढूँढ़ने - - - - - अजब एक मेला।

शब्दार्थ :-

संतरी - सिपाही   दनादन - जल्दी-जल्दी
न्यौता - निमंत्रण   छकूँगा - खाऊँगा
झमेला - समस्या

अर्थ :-

राजा की आज्ञा के अनुसार सिपाही मोटी गर्दन वाले व्यक्ति की खोज में निकल पड़े। बाजार में वही चेला मिला जो बैठकर जल्दी-जल्दी हलवा खा रहा था। वह काफी मोटा-ताजा भी था। सिपाही चेला के पास जा कर बोले चलो तुम्हें महाराजा ने बुलाया है, तुम अतिशीघ्र चलें। चेला मन-ही-मन बहुत खुश हुआ सोचा कि अब मैं राजा के यहाँ अकेला ही भर पेट भोजन करूँगा। लेकिन जब वह राजा के पास पहुँचा तो भीड़ देख कर घबरा गया।

कविता - यह मोटी है गर्दन - - - - - चाहे फाँसी चढ़ाओ।

शब्दार्थ -

बकबक - बकवास   चालाक - बुद्धिमान

अर्थ -

मोटी गर्दन वाले चेला को राजा के सामने लया गया तो राजा बोले इसकी गर्दन बहुत मोटी है इस लिए इसे तुरंत फाँसी लटका दो। यह

सुनकर चेला घबरा गया। उसने राजा से पूछा कि हमारी गलती क्या है जो फाँसी दी जा रही है। राजा उसे डाँटते हुए चुप रहने को कहा। लेकिन चेला बुद्धिमान था वह शोर मचाने लगा और कहा कि मुझे फाँसी देने से पहले गुरु जी के दर्शन करा दें।

कविता — गुरुजी बुलाए गए .... फाँसी पर मैं मरूँगा।

शब्दार्थ -

झट - तुरंत गुनगुनाया - बोला

अर्थ:- चेले ने जब गुरु जी को बुलाने का आग्रह किया तो गुरु जी को यथाशीघ्र वहाँ उपस्थित किया गया। गुरु ने चेला को रोते हुए देखा तो वे सारी स्थिति समझ गये। गुरु जी ने चेला के कान में कुछ कहा। इसके बाद गुरु और चेला आपस में झगड़ने लगे, दोनो धक्का-मुक्की करने लगे कि फाँसी पर मैं चढ़ूँगा, मैं ही मरना चाहता हूँ।

कविता:- हटाए न हटते .... छत्र उन पर तनेगा।

शब्दार्थ -

अड़े - अड़ना, करामात - आश्चर्य भरा काम

महूरत - (मुहूर्त) किसी काम को करने का निश्चित समय

चक्रवर्ती - विश्व विजेता

अर्थ -

जब गुरु और चेला फाँसी पर चढ़ने के लिए आपस मे लड़ने लगे, वे इस तरह उलझ गए थे कि हटाने से भी नहीं हटते थे। राजा ने उन दोनों से झगड़ने तथा फाँसी

Scanned with CamScanner

पर आपने आप को चढ़ाने का कारण पूछा तो, गुरु जी ने कहा - महाराज अभी फाँसी पर चढ़ने का बहुत अच्छा मुहूर्त है, जो भी इस क्षण फाँसी पर चढ़ेगा वह चक्रवर्ती सम्राट बनेगा। उसको सारे संसार पर राज होगा। इसी लिए मैं चाहता हूँ कि फाँसी पर मैं चढ़ूँ, और चेला चाहता है कि वह खुद चढ़े।

कविता - कहा राजा ने ------ था अनबूझ राजा।

शब्दार्थ:-

गर - अगर   कथन - कही हुई बात

अनबूझ - नासमझ, मूर्ख

अर्थ:-

गुरु जी के द्वारा फाँसी पर चढ़ने का शुभ मुहूर्त की बात सुन कर मूर्ख राजा ने सोचा की गुरु की वाणी कभी असत्य नहीं होती, इसलिए राजा ने मन-ही मन यह निश्चय कर लिया की मैं ही फाँसी पर चढूँगा। और वह फाँसी पर लटक गया। उसके फाँसी पर लटकते ही सभी नगर वासी खुश हो गये। घर-घर में खुशी की लहर दौड़ गई। क्योंकि अंधेर-नगरी का मूर्ख राजा मर चुका था।

प्रश्न (1) टका पुराने जमाने का सिक्का था। अगर आजकल सब चीजें एक रुपया किलो मिलने लगे तो उससे किस तरह के फायदे और नुकसान होंगे?

उत्तर - यदि आजकल सभी चीजें एक रुपये किलो मिलने लगे तो गरीब लोगों को काफी फायदा होगा वे भी सारी चीजें अपनी आवश्यकता के अनुसार खरीदेंगे। समाज में समानता आ जायेगी। लेकिन ऊँचे तथा व्यवसायी लोगों को हानि का सामना करना पड़ेगा।

टके की बात

देश	—	मुद्राएँ
② साउदी अरब	—	रियाल
जापान	—	येन
फ्रांस	—	फ्रेंक
इटली	—	लीरा
इंग्लैंड	—	पाउंड (पौंड)

कविता की कहानी

3. कविता पढ़कर 'अंधेर नगरी' के बारे में कुछ वाक्य लिखें- (सड़कें, बाजार, राजा का राजकाज)

उत्तर- कविता में कवि ने 'अंधेर नगरी' की सड़कों को चमाचम बताया है। वहाँ के बाजार की चर्चा करते हैं कि वहाँ के बाजार में सारी चीज बहुत सस्ती मिलती थी। वहाँ का राजा मूर्ख था फलतः वहाँ शासन नाम की चीज नहीं थी।

प्रश्न-④ क्या ऐसे देश को 'अंधेर नगरी' कहना ठीक है? अपने उत्तर का कारण भी बताओ।

उत्तर- मैं इससे पूरी तरह सहमत हूँ। क्योंकि अंधेर नगरी में कोई शासन व्यवस्था नहीं थी, वहाँ के के लोगों के बीच राजा के प्रति द्वेष भावना रखते थे। वहाँ न्याय करने का तरीका भी गलत था। क्योंकि वहाँ का राजा ही मूर्ख था।

कविता की बात-

(क)- अंधेर नगरी की प्रजा राजा के मरने पर खुश क्यों हुई?

उत्तर- राजा के मरने के बाद अंधेर नगरी की प्रजा बहुत खुश थी क्योंकि वह राजा मूर्ख था, वह शासन व्यवस्था ठीक ढंग से नहीं चला पाता था। वह अन्याय करता था।

Scanned with CamScanner

प्रश्न-(ख) यदि वे राजा से परेशान थे तो उन्होंने उसे खुद क्यों नहीं हटाया?

उत्तर- चूँकि उस समय राजतंत्र था, राजा का पुत्र ही राजा बनता है। राजा को प्रजा नहीं चुनती थी। अतः प्रजा को अपने राजा को खुद नहीं हटा सकती थी। प्रजा को यह विश्वास था कि एक न एक दिन राजा का अंत जरूर होगा।

प्रश्न-(2)(i) गुरु का कथन, झूठ नहीं होता है। गुरु जी ने क्या बात कही थी?

उत्तर- जब गुरुजी अंधेर नगरी पहुँचे तो उन्होंने देखा कि चेला फाँसी पर लटकने वाला है तो उसे बचाने के लिए एक उपाय सोचा और चेला के कान में कहा- हम दोनों यह कहेंगे कि इस शुभ मुहूर्त में जो फाँसी पर चढ़ेगा, वह चक्रवर्ती सम्राट बनेगा।

प्रश्न (ii) राजा यह बात सुनकर फाँसी पर लटक गया। तुम्हारे विचार से गुरुजी ने जो बात कही, क्या वह सच थी?

उत्तर- राजा जब गुरु जी के मुँह से सुना कि इस शुभ-मुहूर्त में जो फाँसी पर चढ़ेगा वह चक्रवर्ती सम्राट बनेगा तो उसके मन में चक्रवर्ती सम्राट बनने की इच्छा होने लगा और फाँसी पर चढ़ गया।

गुरु जी ने जो बात कही थी वह असत्य थी। वे तो मूर्ख राजा को धोखा देने के लिए बात कही थी।

Scanned with CamScanner

प्रश्न - (iii) गुरु जी ने यह बात कह कर सही किया या गलत?
उत्तर - गुरु जी अपने चेले की जान बचाने के लिए यह जो काम किया वह एकदम सही किया।

शब्दों की छान बीन -

(क) छन - क्षण
(ख) भग - भागना
(ग) घनी - अहरी
(घ) बिरानी - परायी, दूसरों की
(ङ) महुर्त - मुहूर्त